अलसी की खेती

खेत की तैयारी :

इसकी खेती मटियार व चिकनी दोमट भूमि में सफलता पूर्वक की जा सकती है खरीफ की फसलें काटने के बाद एक जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए तत्पश्चात कल्टीवेटर अथवा देशी हल से दो जुताई करके खेत अच्छी तरह समतल कर लेना चाहिए।

अलसी की उन्नतिशील प्रजातियों का विवरण

कं.सं.	प्रजाति	विमोचन वर्ष	पकने की अवधि (दिनों में)	उपज कु./हे. सिंचित	उपज कु./हे. असिचित	तेल का प्रतिशत	विशेष
(क) बीज उद्देशीय							
1.	गरिमा	1985	125-130	20-25	-	42-43	गेरूई/रतुआ अवरोधी तथा उक्ठा सहनशील मैदानी क्षेत्रों हेतु
2.	श्वेता	1995	130-135	15-18	10-15	43-44	-
3.	शुभ्रा	1985	130-135	20-22	10-12	43-45	समस्त उ. प्र. हेतु गेरूई/रतुआ अवरोधी उक्ठा व कलिका मक्खी अवरोधी।
4.	लक्ष्मी-27	1987	115-120	15-18	10-15	43-45	बुदेलखण्ड हेतु संस्तुत/गेरूई/रतुआ अवरोधी।
5.	पद्मिनी	1987	120-125	15-18	12-15	43-45	बुदेलखण्ड हेतु संस्तुत फफूदी रोग अवरोधी।
6.	शेखर	2001	135-140	20-25	14-16	43-43	मैदानी क्षेत्रों हेतु उपयुक्त
7.	शारदा	2006	105-110	16-18	-	43-45	सफेद बुकनी अवरोधी।
8.	मऊ आजाद	2008	120-125	16-18	-	43-45	झुलसा अवरोधी।
(ख) द्विउददेशीय							
1.	गौरव	1987	135-150	18-20	रेशा 12-14	42-43	मैदानी क्षेत्रों हेतु उपयुक्त
2.	शिखा	1997	135-150	20-22	रेशा 13-15	42-41	मैदानी क्षेत्रो हेतु उपयुक्त
3.	रशिम	1999	135-140	20-24	रेशा 14-15	41-42	मैदानी क्षेत्रों हेतु उपयुक्त।

4.	पार्वती	2001	140-145	20-22	रेशा 13-14	41-42	बुन्देलखण्ड हेतु संस्तुत उकठा, गेरूई/रतुआ व फफूंदी चूर्ण रोग अवरोधी।
5.	रूचि	2011	132-135	22-25	रेशा 15-16	40-42	समस्त उ.प्र. हेतु संस्तुत उकठा, गेरूई/रतुआ व फफूंदी चूर्ण रोग अवरोधी।

बीज दर :

बीज उद्देशीय प्रजातियों के लिये 30 कि.ग्रा./हे. तथा द्विउद्देशीय प्रजातियों के लिए 50 किग्रा./हे.।

बुवाई की दूरी :

बीज उद्देशीय प्रजातियों के लिये 25 सेमी कूंड़ से कूंड़ तथा द्विउद्देशीय प्रजातियों के लिये 20 सेमी. कूंड से कूंड।

बीज शोधन :

अलसी की फसल में झुलसा तथा उकठा आदि का संक्रमण प्रारम्भ में बीज या भूमि अथवा दोनों से होता है, जिनसे बचाव हेतु बीज को 2.5 ग्राम थीरम या 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम से प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचार करके बोना चाहिए।

उर्वरकों की मात्रा :

असिंचित क्षेत्र के लिए अच्छी उपज प्राप्ति हेतु नत्रजन 50 किग्रा. फास्फोरस, 40 किग्रा. एवं 40 किग्रा. पोटाश की दर से तथा सिंचित क्षेत्रों में 100 किग्रा. नत्रजन 60 किग्रा. फास्फोरस एवं 40 किग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। असिंचित दशा में नत्रजन व फास्फोरस एवं पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा तथा सिंचित दशा में नत्रजन की आधी मात्रा व फास्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के समय चोगें द्वारा 2-3 सेमी. नीचे प्रयोग करें सिंचित दशा में नत्रजन की शेष आधी मात्रा आप ड्रेसिंग के रूप में प्रथम सिंचाई के बाद प्रयोग करें। फास्फोरस के लिए सुपर फास्फेट का प्रयोग अधिक लाभप्रद है।

सिंचाई :

यह फसल प्रायः असिंचित रूप में बोई जाती है, परन्तु जहां सिंचाई का साधन उपलब्ध है वहां दो सिंचाई पहली फूल आने पर तथा दूसरी दाना बनते समय करने से उपज में बढ़ोत्तरी होती है।

फसल सुरक्षा :

(क) प्रमुख कीट :

1. गालमिज :

इस कीट का मैगट फसल की खिलती कलियों के अन्दर पुंकेसर को खाकर नुकसान पहुॅचाता है जिससे फलियों में दाने नहीं बनते है।

2. बालदार सूॅड़ी :

सूड़ी काले रंग की होती है तथा पूरा शरीर बालों से ढका रहता है। सूड़ियॉ प्रारम्भ में झुण्ड में रह कर पत्तियों को खाती है तथा बाद में पूरे खेत में फैल कर पत्तियों को खाती है। तीव्र प्रकोप की दशा में पूरा पौधा पत्ती विहीन हो जाता है।

आर्थिक क्षति स्तर :

कं.सं.	कीट का नाम	फसल की अवस्था	आर्थिक क्षति स्तर
1.	गालमिज	कलियाँ बनते समय	5 प्रतिशत प्रकोपित कलियॉ

नियंत्रण के उपाय :

1. गर्मी में गहरी जुताई करना चाहिए।
2. संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए।
3. गालमिज के नियंत्रण हेतु अवरोधी प्रजातियॉ जैसे नीलम, गरिमा, श्वेता की बुवाई करनी चाहिए।
4. अक्टूबर के तीसरे सप्ताह तक बुवाई करने से गलमिज का प्रकोप कम होता है।
5. चना, राई/सरसों एवं कुसुम के साथ सहफसली खेती करने से गालमिज का प्रकोप कम हो जाता है।
6. यदि कीट का प्रकोप आर्थिक क्षति स्तर पार कर गया हो तो निम्नलिखित कीटनाशों का प्रयोग करना चाहिए।
    1. गालमिज के नियंत्रण हेतु मिथाइल-ओ.डेमेटान 25 प्रतिशत ई.सी. की 1.00 लीटर अथवा मोनोक्रोटोफास 36 प्रतिशत एस.एल. की 600-750 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. छिड़काव करना चाहिए।
    2. बालदार सूँडी के नियंत्रण के लिए मैलाथियान 5 प्रतिशत डब्लू.पी. की 20-25 किग्रा. प्रति हेक्टेयर बुरकाव अथवा मैलाथियान 50 प्रतिशत ई.सी. की 1.50 लीटर अथवा डाईक्लोरोवास 76 प्रतिशत ई.सी. की 500 मिली. मात्रा अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई.सी. की 1.25 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से लगभग 600-750 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

(ख) प्रमुख रोग :

1. उकठा :

रोगग्रस्त पौधों की पत्तियाँ नीचे से ऊपर की ओर पीली पड़ने लगती है तथा बाद में पूरा पौधा सूख जाता है।

2. अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा :

इस रोग में पत्तियों के ऊपरी सतह पर गहरे कत्थई रंग के धब्बे बनते है जो गोल छल्ले के रूप में पत्तियों पर स्पष्ट दिखाई दते है। तीव्र प्रकोप की दशा में धब्बे आपस में मिल जाते है जिससे पूरी पत्ती झुलस जाती है। यह रोग तने, शाखाओं एवं फलियों को भी प्रभावित करता है। तीव्र प्रकोप की दशा में फलियाँ काली होकर मर जाती है।

3. गेरूई :

इस रोग में पत्तियों, पुष्पक्रमों तथा तने पर नारंगी रंग के फफोले बनते है जिससे पत्तियाँ पीली होकर सूखने लगती है।

4. बुकनी रोग :

इस रोग में पत्तियों पर सफेद चूर्ण दिखाई देते है, जिससे बाद में पत्तियाँ सूख जाती है।

नियंत्रण के उपाय :

1. बीज उपचार :

1. उकठा रोग के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडरमा विरडी 1 प्रतिशत/ट्राइकोडरमा हारजिएनम 2 प्रतिशत डब्लू.पी. की 4.0 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से बीजशोधन कर बुवाई करना चाहिए।
2. अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु थीरम 75 प्रतिशत डब्लू.पी. 2.5 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से बीजशोधन कर बुवाई करना चाहिए।

2. भूमि उपचार :

1. भूमि जनित एवं बीज जनित रोगों के नियंत्रण हेतु बायोपेस्टीसाइड (जैव कवक नाशी) ट्राइकोडरमा बिरडी 1 प्रतिशत डब्लू.पी. अथवा ट्राइकोडरमा हारजिएनम 2 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.5 किग्रा. प्रति हे.60-75 किग्रा. सड़ी हुए गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छीटा देकर 8-10 दिन तक छाया में रखने के उपरान्त बुवाई के पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला देने से अलसी के बीज/भूमि जनित रोगों के प्रबन्धन में सहायक होता है।

3. पर्णीय उपचार :

1. अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा एवं गेरूई रोग के नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 75 डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा मात्रा प्रति हेक्टेयर लगभग 600-750 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।
2. बुकनी रोग के नियंत्रण हेतु घुलनशील गंधक 80 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.50 किग्रा. प्रति हेक्टेयर लगभग 600-750 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

(ग) प्रमुख खरपतवार :

बथुआ, सेन्जी, कृष्णनील, हिरनखुरी, चटरी-मटरी, अकरा-अकरी, जंगली गाजर, गाजर, प्याजी, खरतुआ, सत्यानाशी आदि।

नियंत्रण के उपाय :

1. खरपतवार नियंत्रण हेतु पेण्डीमेथलीन 30 प्रतिशत ई.सी. की 3.30 लीटर प्रति हेक्टेयर 800-1000 लीटर पानी में घोलकर फ्लैट फैन नाजिल से बुवाई के 2-3 दिन के अन्दर समान रूप से छिड़काव करें।

प्रभावी बिन्दु :

1. संस्तुत प्रजातियों के प्रमाणित बीज प्रयोग करें।
2. संतुलित मात्रा में उर्वरक प्रयोग करे।
3. सिंचाई उपलबध होने पर फूल आने के समय कम से कम एक सिंचाई अवश्य करें।
4. गालमिज के नियंत्रण के लिए कली बनते समय ही किसी कीट नाशक का छिड़काव कर दिया जाये।